

National conference

MAA/NACW/10936/2015

ISSN : 2454-7905

SIF 2021 Impact Factor : 7.479

**MAA International
Journal of Research Journal**

Year - IV, Vol. I, Issue- IV, 28 March 2022

माहिती विभाग, महाराष्ट्र शासन, नांदेड

संलग्नित

स्वातंत्र्य संघर्षातील महाराष्ट्र विद्यापीठ, नांदेड

कोशिका क्रमांक 10001 मध्ये यासाठी प्रकाशित

एन. वि.सी.आ. मध्ये यासाठी प्रकाशित परिसंवाद (ऑनलाईन)

माहिती विभागातील रुग्ण प्रतिमा

* प्रमुख संपादक *

प्राचार्य डॉ. रमिला धूत

* संपादक *

प्रो.डॉ. शैलजा फारस

* सह संपादक *

प्रो.डॉ. रमिला धूत

Co-ordinator
IQAC

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)



PRINCIPAL

59	27.	मराठी लोकसाहित्यातून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा	डॉ. बी.पी. सुभाष नारायणे (डॉ. सहाय)	124
63	28.	मराठी संत साहित्यातून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा	मराठी कथा डॉ. जुलूस गोपिनाथराव रोडके	130
68	29.	मराठी संत साहित्यातून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा : संतप्रेष्ठ कविवरित्री जनाबाई :	प्रा. श्री. ल. ल. राव चौरे	135
71	30.	डा. डॉ. महादेव शांच्या कवितेतून येणाऱ्या स्त्रीचित्रक प्रतिमा	डॉ. गिरीश क. दिनाभाय कापरी	136
71	31.	संत तुकारामांच्या अंतर्गतली स्त्री प्रतिमा	डॉ. ल. ल. राव चौरे	140
74	32.	मराठी कथा कादंब-यातून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा	डॉ. गिरीश क. दिनाभाय कापरी	142
77	33.	"मराठी लोकसाहित्यातून अभिव्यक्त झालेली - स्त्री प्रतिमा"	प्रा. डॉ. स. ल. राव चौरे	144
81	34.	मराठी कविवरित्री अनुराधा पाटील यांच्या कवितांमधून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा	डॉ. ल. ल. राव चौरे	148
88	35.	मराठी साहित्यातील स्त्री प्रतिमा	गीतांजली उ. भास रहाडे	153
92	36.	इ.स. १९११ ते २००० च्या दशकातील निगडक मराठी स्त्री आत्मकथांचा संक्षिप्त परिचय	प्रा. डॉ. ल. ल. राव चौरे प्रा. डॉ. गिरीश क. दिनाभाय कापरी	157
96	37.	कल्पना हुधाळ यांच्या कवितेतून स्त्री प्रतिमा कवितारांगद - सिल्वर कट म्हणजेच काही	प्रा. डॉ. ल. ल. राव चौरे	162
101	38.	मराठी साहित्यातील कविवरित्रींच्या काव्यातून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा	प्रा. डॉ. ल. ल. राव चौरे	165
104	39.	मराठी साहित्यातील स्त्री प्रतिमा	पद्मसुंदर विठ्ठल दिक्षितराव	170
107	40.	स्त्रीनिष्ठ कथात्मक साहित्यातील स्त्री प्रतिमा	प्रा. डॉ. ल. ल. राव चौरे	175
112	41.	नारायण गुंते आणि अमोल यांच्या कवितेतून स्त्री प्रतिमा - काही निरीक्षण	डॉ. विश्वनाथ शिंदे	181
117	42.	मराठी संत साहित्यातून अभिव्यक्त झालेली स्त्री प्रतिमा	प्रा. डॉ. ल. ल. राव चौरे	193

Page 137

1. C_{10}H_8 (naphthalene) C_{10}H_6 (anthracene) C_{10}H_4 (phenanthrene) C_{10}H_2 (pyrene) C_{10}H_0 (coronene)

$$| \mathbf{r} | = 0.25, 0.5, 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64, 128, 256, 512, 1024, 2048, 4096, 8192, 16384, 32768, 65536, 131072, 262144, 524288, 1048576, 2097152, 4194304, 8388608, 16777216, 33554432, 67108864, 134217728, 268435456, 536870912, 1073741824, 2147483648, 4294967296, 8589934592, 17179869184, 34359738368, 68719476736, 137438953472, 274877906944, 549755813888, 1099511627776, 2199023255552, 4398046511104, 8796093022208, 17592186044416, 35184372088832, 70368744177664, 140737488355328, 281474976710656, 562949953421312, 1125899906842624, 2251799813685248, 4503599627370496, 9007199254740992, 18014398509481984, 36028797018963968, 72057594037927936, 144115188075855872, 288230376151711744, 576460752303423488, 1152921504606846976, 2305843009213693952, 4611686018427387904, 9223372036854775808, 18446744073709551616, 36893488147419103232, 73786976294838206464, 147573952589676412928, 295147905179352825856, 590295810358705651712, 1180591620717411303424, 2361183241434822606848, 4722366482869645213696, 9444732965739290427392, 18889465931478580854784, 37778931862957161709568, 75557863725914323419136, 151115727451828646838272, 302231454903657293676544, 604462909807314587353088, 1208925819614629174706176, 2417851639229258349412352, 4835703278458516698824704, 9671406556917033397649408, 19342813113834066795298816, 38685626227668133590597632, 77371252455336267181195264, 154742504910672534362390528, 309485009821345068724781056, 618970019642690137449562112, 1237940039285380274899124224, 2475880078570760549798248448, 4951760157141521099596496896, 9903520314283042199192993792, 19807040628566084398385987584, 39614081257132168796771975168, 79228162514264337593543950336, 158456325028528675187087900672, 316912650057057350374175801344, 633825300114114700748351602688, 1267650600228229401496703205376, 2535301200456458802993406410752, 5070602400912917605986812821504, 10141204801825835211973625643008, 20282409603651670423947251286016, 40564819207303340847894502572032, 81129638414606681695789005144064, 162259276829213363391578010288128, 324518553658426726783156020576256, 649037107316853453566312041152512, 1298074214633706907132624082305024, 2596148429267413814265248164610048, 5192296858534827628530496329220096, 10384593717069655257060992658440192, 20769187434139310514121985316880384, 41538374868278621028243970633760768, 83076749736557242056487941267521536, 166153499473114484112975882535043072, 332306998946228968225951765070086144, 664613997892457936451903530140172288, 1329227995784915872903807060280344576, 2658455991569831745807614120560689152, 5316911983139663491615228241121378304, 10633823966279326983230456482242756608, 21267647932558653966460912964485513216, 42535295865117307932921825928971026432, 85070591730234615865843651857942052864, 170141183460469231731687303715884105728, 340282366920938463463374607431768211456, 680564733841876926926749214863536422912, 1361129467683753853853498429727072845824, 2722258935367507707706996859454145691648, 5444517870735015415413993718908291383296, 10889035741470030830827987437816582766592, 21778071482940061661655974875633165533184, 43556142965880123323311949751266331066368, 87112285931760246646623899502532662132736, 174224571863520493293247799005065324265472, 348449143727040986586495598010130648530944, 696898287454081973172991196020261297061888, 1393796574908163946345982392040522594123776, 2787593149816327892691964784081045188247552, 5575186299632655785383929568162090376495104, 11150372599265311570767859136324180752990208, 22300745198530623141535718272648361505980416, 44601490397061246283071436545296723011960832, 89202980794122492566142873090593446023921664, 178405961588244985132285746181186892047843328, 356811923176489970264571492362373784095686656, 713623846352979940529142984724747568191373312, 1427247692705959881058285969449495136382746624, 2854495385411919762116571938898990272765493248, 5708990770823839524233143877797980545530986496, 11417981541647679048466287755595961091061972992, 22835963083295358096932575511191922182123945984, 45671926166590716193865151022383844364247891968, 91343852333181432387730302044767688728$$
[illegible]

१४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

4. 2015 年 12 月 25 日 20:25:47 收到 2015 年 12 月 25 日 20:25:47

2000-01-01 to 2000-01-01

1950-1951

【参考文献】

1944-1945

[illegible]

प्रमाण सं. ४०, दिनांक २००३/२००४

[illegible]

पृष्ठ सं. ३३

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

[illegible]

Handwritten signature



Ans

Co-ordinator
IQAC

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Puma (Jn.) Dist. Parbhani

11

© 2006 Blackwell Publishing Ltd, *Journal of Internal Medicine* 260: 105–112

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

Co-ordinator
IQAC
 Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
 Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)



PRINCIPAL
 Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
 Purna (Jn) Dist. Parbhani

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319-9315



VIDYAWARTA

Issue-35, Vol-06 July to Sept-2020

Peer Reviewed International Refereed Research Journal



- | | |
|---|-----|
| 13) MOBILE APPLICATIONS IN LIBRARY SERVICES
Telke Sudhakar B., Dist- Nanded | 67 |
| 14) LAW RELATING TO JUVENILE JUSTICE WITH SPECIAL REFERENCE TO JUVENILE ...
Shailender Tyagi & Dr. O.P. Rai, Agra | 70 |
| 15) The Tibetans in Exile: Nationalism and Democracy
Dr. Manish Sinha & Anil Kumar, Bodhgaya | 75 |
| 16) SEASONAL TEMPERATURE VARIATION AND THEIR INFLUENCE ON THE LEVEL ...
V. K. GARAD, WASHI (M. S.) INDIA | 79 |
| 17) पंचायतराज व्यवस्थेतील ग्रामसभा : एक अभ्यास
सुलोचना निवृत्ती चाटे, औरंगाबाद | 82 |
| 18) वसुधैव कुटुम्बकम् या काव्येतील मानवी स्वतंत्रतेच्या उद्घोष आणि जीवनदर्शनातील महत्त्व
प्रा.डॉ. शिवसाहेब कापसे, जि. परभणी | 84 |
| 19) संगमनेर तालुक्यातील माध्यमिक शाळांतील गणित / विज्ञान शिक्षकांच्या व्यावसायिक पात्रता ...
श्री. चोथे आण्णासाहेब सावळेराव & डॉ. सुचेता संकपाळ, नाशिक | 86 |
| 20) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संघर्षातून जकापांचा मूलमंत्र देणारे प्रेरणास्थान
संघर्ष ब्रह्मराम सावळे & अनिल कान्होजी दिपके, औरंगाबाद | 88 |
| 21) स्वातंत्र्यपूर्व कालीन चंद्रपूर जिल्ह्यातील सामाजिक सभा, संघटना व त्याचे कार्य
प्रा. डॉ. आर. पी. किरमिरे, जिल्हा- गडचिरोली | 90 |
| 22) 'श्री' देवता : एक दृष्टीक्षेप
प्रा.डॉ. प्रकाश फड, परळी वैजनाथ | 95 |
| 23) ऊचनेर परिसरातील दलित शेतकरी यांचा अभ्यास
प्रा.डॉ. संजय बाबुराव वाकळे, जि. औरंगाबाद | 96 |
| 24) वर्तमान परिस्थिती में पर्वतन को दृष्टि से दुर्गों का महत्त्व
डॉ. राजा हृदयेश अम्बोल | 101 |
| 25) ...
डॉ. रोमन के. विठ्ठल | |

Co-ordinator
IQAC



PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist. Parbhani

श्री गुरु बुद्धिस्वामी महाविद्यालय, पूर्णा, ता. पूर्णा, जि. परभणी

[illegible]

स्वातंत्र्याच्या वळण दिव

प्रस्थापितांच्या सोयीच्या समाजरचनेमुळे, मान्यतेमुळे विशिष्ट वर्गाच्या शोषणाला मार्ग मोकळा झाला. देव, धर्म पुढे करून अन्याय अत्याचाराचा परवाना मिळाल्यासारखे दुर्बल घटकांच्या जीवनाचे वाटोले करणारे धर्ममार्तंड समाजजीवनात उजळत गेले. माथ्याने मिरवतात. माणूस म्हणून जगताना दोन दुर्बलया माणसांना यणाऱ्या अनंत अडचणी न संपणाऱ्या आहेत. स्वातंत्र्य हो कल्पना राजकीय, भौगोलिक, सत्तेपुरतं मर्यादीत झाली समाजात स्वातंत्र्य झिरपलेले नाही. स्वातंत्र्याच्या सत्त, वर्षानंतरही दलित, दुर्बल, समासवर्गीयांवर हाणारे अन्याय, अत्याचार शोषण थांबलेले नसून जन्मवीनरूपात ते सुरू राहिले. गुलामी केवळ आर्थिक स्वरूपाची होती ती नाही, तर व्यापारी, राजकीय व ग्रामस्ववादा भीतीचे वातावरण निर्माण करून उच्च जातीचा उबाव निर्माण करण्याची नवाऱ्यांची कडील घेतली. गौळणू समाजापासित असले तरी तिने निर्माण केलेल्या समाजात जातीय यादव्या अद्याप अत्यंत अदलत. समाजात एकच ठेव त्यांच्या मानातील आदि उच्चशिक्षित अद्याप अदलत. समाजात एकच ठेव त्यांच्या मानातील आदि उच्चशिक्षित अद्याप अदलत. समाजात एकच ठेव त्यांच्या मानातील आदि उच्चशिक्षित अद्याप अदलत.

[illegible]

PRINCIPAL

**Co-ordinator
IQAC**

Shri Guru Buddhiswami
Jn Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

संघर्षासाठी तयार राहावे लागणार आहे. तरच बदल होईल. विज्ञानीनंष्ट्र, क्रांतीप्रवण विचाराला सोबत घेऊन जीवन जगावे तरच खऱ्या अर्थाने स्वातंत्र्य मिळाले असे म्हणता येईल.

'शब्दांनो अमृच्या घेतला नव्या दिशांनी पेट

अनू गळ्यात आमच्या सजले क्रांतीपोत

प्रश्नांनी ओथंबून येती लक्ष इथे आभाळे

इथेच येतो पाऊस होऊन भक्तीभारले डोळे' (उत्थानगुंफा - ७४)

सर्विधानकर्त्यांनी लोकशाही मूल्यांची पेरणी केली. त्यातून स्वातंत्र्य समता, बंधुता, सामाजिक न्याय वा मूल्यांमुळे जनसामान्यांचे कल्याण होत गेले, समाज जीवनाला नवपालवी बहरण्याच्या काळात हातात कुन्हाडी घेऊन प्रस्थापितांमधील प्रतिगामी घाव घालण्याचे काम करीत असतात, तेव्हा त्यांना थोपवण्यासाठी क्रांतीगीत ओठावर येते. या गीतातून समाजमन तयार होते, क्रांतीप्रवण, क्रांतीच्या वाटेवर चालावयास लागते वार्चा जणूच कवी मनाला दिसते. म्हणून कवी म्हणतो,

'आम्ही गुन्हेगार ठरलो

स्मेचे ध्वज खांद्यावर बाळगले म्हणून !

पण शोषणसत्तेने लादलेले पारतंत्र्य नाकारले आम्ही' (का.मी.७८)

प्रस्थापितांच्या स्वार्थकेंद्रीवृत्तीचा निषेध कवी करतात. मानवी होत, कल्याण, विकास जिथे नाकारला जातो तिथे विषमतेची मूळ रूजु लागतात. त्याला वेळीच उपटून टाकणे मानवी स्वातंत्र्यासाठी उपयोगी ठरणारे आहे. याची शिकवण महामानव बाबासाहेब आंबेडकरांनी दिली आहे.

धर्माने ज्यांचे पंख कापले होते

तू त्यांच्या उड्डाणांचो धगधगतो ऊर्बा होता

सान्याच रुढींनी गळे कापले होते

त्या अनाथ हंबरड्यांचो तू माव जाहला होता (का.मी.१०७)

स्वातंत्र्य समग्र जीवनाला व्यापणारे असले पाहिजे. याची जणूच यशवंत मनोहर यांनी कविता करून देते. आंबेडकरवादी विचाराला व्यापक स्वातंत्र्य अपेक्षित असून मानवतावादी मूल्य घेऊन तळभरताला उभारी देण्याकरिता ही कविता पुढे येते. बौद्धिक, मानसिक, भावनिक भौतिक पातळीवर परिवर्तन होण्याची निकड समजणारी ही कविता आहे. समता, बंधुता, सामाजिक न्याय हे स्वातंत्र्याचे मिळणार आहेत कोणताही घटक वजा करून स्वातंत्र्य मिळविणे निरर्थक आहे. म्हणून मानवी कल्याण, होत, जोपासणाऱ्या क्रांतिकारी विचारसरणी समाजमनाने स्विकारण्याची आवश्यकता कवी मांडतो आहे.

२) खांडेकर ताराचंद, आंबेडकरी तत्वज्ञान, पृ.०९

३) यशवंत मनोहर, स्वप्नसंहिता, पृ.१८, १९

४) यशवंत मनोहर, उत्थानगुंफा, पृ.१५

५) डॉ.भालचंद्र मुनगेकर, भारतातील आर्थिक सुधारणा आणि दलित आंबेडकरी दृष्टीकोन, सुगावा प्रकाशन, पुणे, ऑगस्ट २००५, पृ.२५

६) यशवंत मनोहर, उत्थानगुंफा, पृ.७४

७) यशवंत मनोहर, काव्यभीमान, पृ.७८

८) यशवंत मनोहर, काव्यभीमान, पृ.१०७

□□□

संदर्भ :

१) यशवंत मनोहर, जीवनधन, पृ.१९

विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 7.041(IJIF)

CO-ordinator
IQAC



PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist. Parbhani

तयार राहावे लक्षणार आहे. तरच बदल होईल. विज्ञाननिष्ठ,
विवाराला सोबत घेऊन जीवन जगावे तरच खऱ्या अर्थाने
ळाले असे म्हणता येईल.

समुच्या घेतला नव्या दिशेने पेट
त आमच्या सजले क्रांतीपोट
जोखून येती लक्ष इथे आभाळे
पाऊस होऊन धक्तीभारले डोळे' (उत्थानगुंफा - ७४)
संविधानकर्त्यांनी लोकशाही मूल्यांची पेरणी केली. त्यातून
समता, बंधुता, सामाजिक न्याय या मुल्यांमुळे जनसामान्यांचे
ज्ञेत गेले, समाज जीवनाला नवपालवी बहरण्याच्या काळात
न्हाडी घेऊन प्रस्थापितांमधील प्रतिगामी धाव घालण्याचे काम
सतात, तेव्हा त्यांना थोपवण्यासाठी क्रांतीगीत ओठावर येते,
तून समाजमन तयार होते, कृतीप्रवण, क्रांतीच्या वाटेवर
सि लागते याची जाणीव कवी मनाला दिसते. म्हणून कवी

गुन्हेगार ठरला

वज खांद्यावर बाळगले म्हणून !

वजसनेने लादलेले पारतंत्र्य नाकारले आम्ही* (का.भी.७८)
प्रस्थापितांच्या स्वार्थकेंद्रिततेचा निषेध कवी करतात. मानवी
कल्याण, विकास जिथे नाकारला जातो तिथे विषमतेची मूळ
गणतत. त्याला वेळीच उपटून टाकणे मानवी स्वातंत्र्यासाठी
ठेवणारे आहे. याची शिकवण महामानव बाबासाहेब आंबेडकरांनी
आहे.

ज्यांचे पंख कापले होते

च्या डुगणांची धधधगती ऊर्जा होता

ख रुढींनी गळे कापले होते

मनाय हंबरड्यांची नु राय झाला होता (का.भी.१०७)

स्वातंत्र्य संघर्ष जीवनाला व्यापणारे असले पाहिजे, याची
व यशवंत मनोहर यांची कविता करून देते. आंबेडकरवादी
ताला व्यापक स्वातंत्र्य अपेक्षित असून मानवतावादी मूल्य घेऊन
परताला उभारी देण्याकरिता ही कविता पढे येते: बौद्धिक, मानसिक,
निक भौतिक पातळीवर परिवर्तन होण्याची निकड सांगणारी ही
ता आहे. समता, बंधुता, सामाजिक न्याय हे स्वातंत्र्याचे मिळणार
क्ष कोणताही घटक वजा करून स्वातंत्र्य मिळविणे निरर्थक आहे.
तून मानवी कल्याण, होत, जोपासणारे क्रांतिकारी विचारसरणी
जिम्हाने शिखारण्याची आवश्यकता कवी मांडतो आहे.

संदर्भ :

१) यशवंत मनोहर, जीवनगान, पृ.१९

- २) खांडेकर ताराचंद, आंबेडकरी तत्त्वज्ञान, पृ.०९
- ३) यशवंत मनोहर, स्वप्नसंहिता, पृ.१८, १८
- ४) यशवंत मनोहर, उत्थानगुंफा, पृ.१५
- ५) डॉ.भालचंद्र मुनगेकर, भारतातील आर्थिक सुधारणा
आणि दलित आंबेडकरी दृष्टीकोन, सुगावा प्रकाशन, पुणे, ऑगस्ट
२००५, पृ.२५
- ६) यशवंत मनोहर, उत्थानगुंफा, पृ.७४
- ७) यशवंत मनोहर, काव्यभीमान, पृ.७८
- ८) यशवंत मनोहर, काव्यभीमान, पृ.१०७

□□□



आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August-2020, Issue-68, Vol-01

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana
Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post.
Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat."

Co-ordinator
IQACShri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07586007695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vishwawartha@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205



PRINCIPAL

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

14) A STUDY ON ONLINE BANKING/E-BANKING Baddam Niharika Goud, Hyderabad, Telangana	75
15) Impact of Air Pollution on Human Health in Obra Town Dr. Kailash Nath Singh, Prayagraj	83
16) प्रपंच आणि परमार्थाच्या असंतुलनाची 'कावड' प्रा.डॉ. मधु सावंत, नांदेड	88
17) संत तुकाराम यांच्या साहित्यातील सामाजिक विचार प्रा.डॉ.कापसे एस. डी., जि. परभणी	94
18) सांगली जिल्ह्यातील दुष्काळाचे सामाजिक व आर्थिक परिणाम श्री. किशोर नारायण चंदनशिवे	97
19) छत्रपती शाहू महाराजांचे आर्थिक विचार एक प्रगल्भ दृष्टीकोण प्रा. प्रकाश जंगले, ठाणे	104
20) यशवंतराव चव्हाण यांचे साहित्य आणि विचार डॉ. नाना झगडे, जि. पुणे	106
21) विज्ञान शिक्षण : वैज्ञानिक दृष्टिकोन आणि शैक्षणिक संपादन प्रशांत वसंतराव चव्हाण, जि. वर्धा	109
22) माध्यमिक स्तरावरील संगमनेर तालुक्यातील गणित / विज्ञान शिक्षकांच्या व्यावसायिक कौशल्य ... श्री. चोथे आण्णासाहेब सावळेराव & डॉ. सुचेता संकपाळ, नाशिक	112
23) हस्तलिखितांच्या संशोधनातील समस्या व उपाय डॉ. अनिता देशमुख, वर्धा	114
24) झुंबा डान्स (एरोबिक्स) : निरोगी आरोग्याचा मंत्र डॉ. अनिता कोल्हे, तह. जि. जळगाव	117
25) कुटुंबसंस्थेतील हिंसाचाराचे स्वरूप व त्याची कारणमिमांसा शिल्पा दिगांबर मेश्राम	119
26) महात्मा जोतीबा फुलेंचा बहुजनवादी संस्वाद प्रा. कल्पना निंबार्ते, भंडारा	123

शब्दातील बोल आलेले आहेत.

संत तुकाराम यांच्या अभंगातून समाज वास्तवाचे भान आणि रुढी परंपरेवर, दैवभोळेपणावर चढवलेला हल्ला म्हणजेच तुकाराम महाराजांची समाजहितांची तळगळ आहे. अद्वैत तत्त्वज्ञानाचा स्विकार करणाऱ्या तुकाराम महाराजांना समाजाची द्वैती भक्ती, उपवास, कर्मकांड, सोवळे-ओवळे, भूत बाधा, जादूटोना, मंत्रांत्र मरीआई, जप जाय्य, भानामती, मसोबा, महायाग अशा समाजात फोफावलेल्या अनिष्ट कल्पना आणि कर्मकांडाला त्यांनी विरोध केला संताच्या सामाजिक कार्याविषयी म्हणूनच वि.भि.कोलते म्हणतात, 'धर्माचा केवळ आध्यात्मिक जीवन असा अर्थ करणे केवळ भ्रम आहे. धर्मात भक्ती आणि समाजाच्या नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय इत्यादी अंगांचा समावेश होतो. या धर्माचे रक्षण करण्यासाठी आणि उन्नतीसाठी महाराष्ट्रातील संतंनी आपले जीवन वेचलं काय हे त्यांचे सामाजिक कार्य म्हटले जाऊ शकत नाही?' त्यामुळे संतांच्या जीवनकार्यातून समाजाबद्दलची भूमिका स्पष्ट होते. संतांच्या मांदीयाळीत संत तुकारामाचे वेगळेपण त्यांच्या अभंगातील विचार-धनाने लक्षात येते. तुकारामाच्या प्रमुख आणि ओजस्वी अशा भूमिकेचा यथार्थ प्रत्यव लेखनातून येतो. त्यांना सामाजिक उन्नतीचे भान होते. म्हणून देखत्याचा शोध ते मानवात घेतात. १७ व्या शतकात ते तीर्थयात्रासंबंधी परखड भूमिका घेतात. माणसातील भेद भाववनेला नकार देतात. त्यांची धर्मचिंतनाची बैठक समाज परिवर्तनाची दिशा स्पष्ट करणारी आहे. अठरापाड जातीत निर्माण केल्या काही देवतांना मांस नैवेद्य लागतो. तर काहींना मोदक, बहिरोबा - खंडोबा - रोटीचे भुकेल्या आहेत. बैताळ केस वाढवून बसला अशा देवतांनाही नाकारून समाजातील अंधश्रद्धा दूर करण्याचा प्रयत्न केला. जेवढे जास्त देवता तेवढे उपासना मार्ग निर्माण होऊन अनेक विकृती समाजाला शासतात हे ओळखून संत तुकारामांनी यास विरोध केला आहे. त्यांच्या सामाजिक कार्याची महती सांगताना ह.श्री.शेणोलीकर म्हणतात, 'ह्याग्रही सनातन, अहंकारी पीडित, दक्षिण समाजकंटक यांचे बिग बाहेर काढून त्यांना जरब बसविणारी मर्मभेदक टीका तुकारामांनी केली आहे. त्यांच्या अभंगांवरून लोक व्यवहाराचे बारीक निरीक्षण, मनुष्य स्वभावाचे सूक्ष्म ज्ञान, जबरदस्त आत्मविश्वास, तडफदार वृत्ती ही निष्पत्ती समाज सुधारकांचे गुणविशेष हे तुकारामाच्या ठिकाणी होते हे पटते.' संत तुकाराम यांच्या अभंगातून समाजातील वाईट रुढी, प्रथा, समज, अंधश्रद्धा, दुवाबाजी, साधुगिरी, नवससायास, दैवभोळेपणा अनेक देवता, कर्मकांड, सोवळे-ओवळे, असा सनातनवादी विरोध दिसून येतो. त्यांचे सामाजिक विचार आमच्या आधुनिक म्हणवल्या जाणाऱ्या माणसाला उपयोगी आहेत. त्यांची अभंगांमधील समाजाला डोळस बनवण्यासाठी, गेली कित्येक वर्षांपासून झटत आहे. धर्माच्या नावावर लोकांची शोषणारी फसवणूक

त्यांना थांबवावयाची आहे. त्यांचे अनेक अभंग जीवनदृष्टी देणारे आणि समाजमान्य आहेत. अभंगांच्या माध्यमातून भक्ती होत असली तरी त्यांच्या अभंगातील विचार समाजाला आजही मार्गदर्शक आहेत. त्यांनी आपल्या अभंगातून सर्वसामान्यांची व्यथा मांडली, वारकरी पंथाच्या तत्त्वज्ञानाचा परिस्थितीशी समन्वय साधून जीवन मूल्याची मांडणी केली. सभोवतालच्या परिस्थितीचे अवलोकन करून व्यक्तीच्या अचोखतीचे, अवनितीचे मूळ शोधले. चिंतनशील होऊन वेळ प्रसंगी कडवट शब्दात भाष्य केले. त्यांच्या वाणीला प्राप्त झालेली धार ब्राह्मणी विचाराला पेलता आली नाही, स्वार्थाची पोळी भाजणाऱ्यांना त्यांचा भाषा आक्रमक वाटली. 'रात्रीन आम्हा युद्धाचा प्रसंग' अनुभवणारे संत तुकाराम म्हणूनच संत श्रेष्ठ ठरतात. समाजमनाचे भरणपोषण आणि समाजाला योग्य मार्गदर्शन करण्यात ते नेहमीच अग्रभागी राहतात.

संदर्भ :

१. र.रा.गोसावी, पाच भक्ती संप्रदाय, प्रतिभा प्रकाशन पुणे, तृतीय आवृत्ती २००८, पृ.२१३.
२. ल.रा.नासिराबादकर, प्राचिन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास, फडके प्रकाशन पुणे, पृ.१५७.
३. वियव गवळी, असाध्य ते साध्य, जिजाई प्रकाशन पुणे, २००३, पृ.२६.
४. प्र.भा.काळे, नामाचा तुका, जगद्गुरु तुकाराम साहित्य परिषद आवृत्ती २००२, पृ.२४२.
५. भालचंद्र नेमाडे, सम्यक विद्रोह (विशेषांक), विद्रोही साहित्य चळवळ महाराष्ट्र, पृ.१५९.
६. डॉ.निर्मलकुमार फडकुले, संत साहित्य सौंदर्य आणि सामर्थ्य, स्वरूप प्रकाशन प्र.आ.२००५, पृ.७९.
७. वि.भि.कोलते, मराठी संतांचे सामाजिक कार्य, द.का.कोलते, यवतमाळ, १९८७, पृ.०५.
८. ह.श्री.शेणोलीकर, प्राचीन मराठी वाङ्मयाचे स्वरूप, मोघे प्रकाशन कोल्हापूर, आवृत्ती सहावी, पृ.११८.
९. जयंत देशपांडे, अभंग तुकोबाचे, साकार प्रकाशन, औरंगाबाद २००६.

□□□



PRINCIPAL

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist. Parbhani

त्यांची अर्भगावणी तितक्याच कठोरपणे पुढे आली. त्यांच्या अर्भगाच्या काही ओळी जरी पाहिल्या तरी समाजात वाढलेली बुवाबाजी, ढोंगी साधू यांच्या विषयीचा विचार स्पष्टपणे येतो. 'अंगा लावूनिया राख । डोळे झांकुनो करितो पाप'. आवडीच्या मते करितो भोजना । भोग नारायण म्हणती केला' 'भेदावया मीस घेवूनी संतांचे । करो कुटुंबाचे दास्य सदा', 'ऐसे संत जाले कळी । तोंडी तंबाखूची नळी', 'टिळा टोपी घातुनि माळा । म्हणती आम्हा साधू'. मुखे सांगे ब्रह्मज्ञान । जन लोकांची कापिले भान', 'सदा पर्वकाळ अंतरी कुटील । तेणे गळां नाळ घालू नवे', 'भगवे तरी श्वान सहज वेष त्याचा । तेथे अनुभवाचा काय पंथ'.

अशा अनेक अर्भगातून समाजातील दोषांना त्यांनी उघडे पाडले, समाज हा अनेक चांगल्या आणि वाईट रूढी - परंपरांनी, चालीरीती घेवून वाटचाल करीत असतो. समाजात वाढलेल्या अंधश्रद्धा दूर करण्याकरिता संत तुकारामांनी आपल्या शब्दांना अस्त्र करून त्यावर प्रहार केला. त्यांनी आपल्या अर्भगातून समाज प्रबोधनाचे कार्य केले याबद्दल न.रा.नासिराबादकर म्हणतात, 'तुकोबांची पिंड जसा भावनाप्रधान भक्ताचा होता, तसा परखड समाज सुधारकांचाही होता. त्याचे व्यक्तिमत्त्व दुधारी होते', 'बुडती हे जन न देखेवे डोळा', अशा कळवळपोटी त्यांना समाजाला उद्धाराचा मार्ग दाखवून त्यांच्या जीवनाच्या वाट उजळायच्या होत्या. देवाच्या नावावर समाजाला लुटणाऱ्यांचा समाचार घेण्यासाठी त्यांची लेखणी परखड होताना दिसते.' निकोप समाजाच्या उभारणीसाठी, समाजाचे आत्मबल वाढविण्याच्या कामी त्यांचे अर्भग महत्त्वाचे ठरतात. समाजात वाढलेला दैववाद, आळसीपणा, प्रारब्धवाद या साऱ्यांना दूर करण्यासाठी त्यांच्या लेखनाचे महत्त्वाचे कार्य केले. रंजल्या-गांजल्या लोकांची सेवा करण्यात देव शोधावा ही समाज मनाला दिलेले उपदेशात्मक शिक्षण समाजाबद्दलची त्यांची आस्था प्रकट करते.

जे का रंजले गांजले । त्यासो म्हणे जो आपुलें ।

तोचो साधु ओळखावा । देव तेथेची जाणावा ।।

समाजातील दिन-दुबळे, गोर-गरीब, रंजलेले-गांजलेले, अपंग अशा लोकांची सेवा हीच ईश्वर सेवा हा विचार त्यांनी दिला. इतकेच नव्हे तर मध्ययुगीन समाजजीवनातील दैवभोळेपणा, अंधश्रद्धा, पराकोटीचे अज्ञान या गोष्टी त्यांना खटकत होत्या, त्यामुळे तुकोबांनी देवाचे, देवाचे गोडवे गाण्यापेक्षा चुकीच्या मार्गाने जाणाऱ्या लोकांना योग्य मार्ग सांगण्यात त्यांना भक्ती केल्याचे समाधान मिळत होते.

संत तुकाराम यांच्या अर्भगातून अंधश्रद्धेवर भाव्य आले आहे, आणिकांच्या कापितो माना । निव्वरपणा पार नाही । भूत भविष्य कळो यावे वर्तमान । मार्गो जाती शवून ।। भूत भविष्य ज्ञानाचा काय शर्प खातो अंध । किंवा कान बकाचे । तोंडी गोड्या पणो ।। इतर रोकडा सज्जनी ।। हो असानिया देव ।। पुढा किंवा निवेव ।। गोड

यावा गांवा ।। ऐसे नवस करी आवा । डोंई वाढवुनि केरा ।। भूत आणि तो अंगास । काळतोंडा सुना । भलते चोरुनि केरा जना ।। आमचे गोसावी आयाचिवृत्तो । करवी शिष्या हातीं उपदेश ।। एक करीती गुरू-गुरू । भोवता भास शिष्यांचा ।। भुके नाही अन्न मिळाल्यावरो पिंडदान' 'मेला राखे दिस । ज्यालेपण जाले वीस', 'घेवूनी धरणे बेसती उपवाशी ।। हट आम्हापासी नाही तैसा' 'जावूनिया तीर्थ तुवा काम केले ।।' समाज जीवनातील वाढलेली बुवाबाजी, ढोंगीपणा, कर्मकांड यांना संत तुकारामांनी विरोध केला आहे. परखड शब्दातून आलेले विचार समाजाला अंतर्मुख होण्यास भाग पाडतात. त्यांच्या समाजविकासाच्या भूमिकेविषयी प्र.भा.काळे म्हणतात, 'विविध दृष्टांतांच्या आधारे त्याग करून अंतःशुद्धीवर भर दिला पाहीजे हे त्यांनी वारंवार स्पष्ट केले आहे. संत तुकोबांची ही कर्मकांडाविरोधी शिकवण तत्कालीन समाजास आवश्यक होती, कारण प्रस्थापित नेतृत्व स्वतःच्या स्वार्थासाठी कर्मकांडाचे अवडंबर माजवून समाजाची दिशाभूल करीत होता. अशा प्रतिकूल परिस्थितीत तुकांबांनी अंतःशुद्धीचे महत्त्व पटवून संपूर्ण समाजाचे ध्यान खेचण्याचा प्रयत्न केला आहे. व समाजाला विकासाची नवी दिशा दाखविली.' समाजाला समृद्ध करण्याची तळमळ तुकाराम महाराजांची होती समाज सुधारणेसाठी आपल्या श्रोत्यांना या जगातील वाईटपासून दूर राहवे आणि आपले मन शुद्ध ठेवावे असा वारंवार उपदेश तुकारामाने केला आहे. तो शुद्ध आचरणावर विशेष भर देणारा नैतिकतावादी सद्गृहस्थ होता. त्यांनी अनेक अर्भगामध्ये प्रायः दुष्ट सामाजिक चाली, अविवेकी कृत्ये आणि प्रच्छन्नता यांविरुद्ध हल्ले चढवले आहेत.' त्यांच्या शब्दातोल सदेतोडपणा आणि स्पष्टता लोकांच्या डोळ्यात अंजन घालणारी होती. समाजाची वाट ज्या अंधारातून जात होती त्या मार्गावर ज्ञानाची मशाल घेवून समाजाला मार्ग दाखवण्याचे काम संत तुकारामांनी केले. तत्कालीन समाजातील बोकाळलेल्या चुकीच्या धर्मकल्पना, रागज-गैरसमज यांना त्यांनी चिकित्साकरणे तोंड दिले. लोकांच्या मनातील चुकीच्या गोष्टी कमी करण्यासाठी त्यांचे लेखणी चालली. गावपायी डॉ.निर्मलकुमार फडफुले म्हणतात, 'तुकारामांनी समाज जीवनाच्या कुरूपतेवर, विसंगतीवर आणि दांभकतेवर निव्वर भेदक प्रहार करून तितके आणितसे दुराचारावल्यासाठी सतत वजन नारीत याच कारण तुकाराम हे परमार्थमागी परमप्राणी लोकिक जीवनातच आणि समाजाच्या जवळपासच श्रुद्धा व श्रुद्धा बाणाव्यासाठी ते सतत प्रयत्नशील होते'.

सामाजिक दबावाविरुद्धापेक्षा समाजप्रामुखे समाजाला नव्यापणासाठी स्वतः आजवले समाजाविषयीच्या प्रेमांमुळे त्यांच्या विचारात, दृष्टीत, कल्पना, वाकसत्य, क्षमाशिलता, संयम आणि चित्त स्थिरता तसेच समाजाला मार्ग असलेल्या प्रकृतीविरोधी कडवट